श्रेष्ठ चित्र बनेगा आपका परम मित्र

कई लोग होते हैं, उनके साथ न्याय नहीं हुआ तो जोश में आ जाते हैं। क्रोध में आकर कुछ कर बैठते हैं। वे नहीं समझते हैं कि ठीक है, उनको न्याय नहीं मिला लेकिन उनके प्रति क्रोध में आना, अत्याचार कर बैठना, यह भी न्याय नहीं है! न्याय नहीं मिला तो न्याय प्राप्त करने के लिए क्रोध करते हैं, हिंसा करते हैं। अच्छा प्राप्त करने के लिए खराब काम कर लेते हैं। यह ठीक नहीं है। हमारा लक्ष्य भी अच्छा होना चाहिए और उसको प्राप्त करने की विधि भी अच्छी होनी चाहिए। कई बार हमने देखा है, इसमें भी हम धोखा खा लेते हैं। हमारे संपर्क में आने वाले कई भाई-बहनें हैं, वे हमसे व्यवहार ठीक नहीं करते, हमारे पीछे ही पड़ जाते हैं, हमसे ईर्ष्या करते हैं, द्वेष करते हैं। मान लो कभी किसी वजह से हमारा उनका स्वभाव-संस्कार नहीं मिलता है। इसके लिए परमात्मा ने बताया है

कि उनके प्रति हमें मधुरता, सहनशीलता, क्षमा, दिव्यता, संतोष, मिलनसार इत्यादि गुणों की धारणा करनी चाहिए और वक्त पर उसे उपयोग भी। इसके बदले उनकी बात या व्यवहार देख हम भी उत्तेजित होकर बोलने लगते हैं, व्यवहार करने लगते हैं। तो हमारी स्थिति होनी चाहिए फरिश्ता स्वरूप की, बिन्दु स्थिति की या प्रभामण्डल की। वो न होकर हम नीची अवस्था में, शरीर-अभिमानी की अवस्था में आ जाते हैं।

ऐसी परिस्थिति में हमारे सामने ज़रूर एक मूल्य होता है। फलाना आदमी इतने सालों से ज्ञान में होते हुए भी कई लोगों को परेशान कर रहा है, इसको कोई नहीं बोल रहा है, हम कुछ बोलें? हम इसको ठीक कर दें? लेकिन यह ज़िम्मेवारी आपको किसने दी है? परमात्मा कहते हैं, 'लॉ' अपने हाथ में नहीं उठाओ। मैं न्यायकारी हूँ, मैं बैठा हूँ, मैं देखूंगा। आप अपना फर्ज़ पूरा करो। आपके लिए जो बताया है वो धारण करो। मैंने जो स्थिति बनाने के लिए कहा है वो बनाओ। धारणा करने में भी हम देखते दूसरों को हैं। अपने आसुरी गुणों को छोड़ने के लिए जो पुरुषार्थ करना है, उसके लिए भी हम दूसरों को देखते हैं। फिर उसके बाद क्या होता है, हमारे मन में उस व्यक्ति का चित्र सामने आता रहता है कि वह व्यक्ति कैसा है! वो ऐसा कैसे बोल रहा है! हमें भी किसी ने इसके बारे में ऐसा बताया था कि फलां व्यक्ति बहुत गुस्सा करता है। आज वो बात सही हो रही है। न जाने कैसे-कैसे उस व्यक्ति के सम्बंध में, मन में अनेक व्यर्थ, निगेटिव संकल्प-विकल्प की बाढ़-सी आ जाती है।

लेकिन ऐसी परिस्थिति में, ऐसे संजोग में हमें क्या करना चाहिए ये परमात्मा पिता ने बहुत सुंदर बात बताई है कि हमारे मन में चित्र आना चाहिए फरिश्ता स्वरूप का, दिव्यता स्वरूप का, प्रभामण्डल का, सारी सृष्टि को सकाश देने का। परंतु उस समय ये चित्र समाप्त हो जाते हैं। उसके बदले उनके द्वारा जो किया हुआ व्यवहार है, उसका चित्र मन में हावी हो जाता है। जिसके कारण आपके विचार भी बदल जाते हैं। आपके मन में आने वाले चित्र भी निगेटिव में बदल जाते हैं। इसलिए अपने सामने श्रेष्ठ चित्रों को कायम रखें या मूल्यों को कायम रखें तो निश्चित रूप से हमारी वो स्थिति बन जायेगी जो परमात्मा चाहते हैं।

ज़रा सोच के देखो, स्वयं परमात्मा ने हमें विश्व-परिवर्तन के कार्य के लिए चुना है। तो हमारे में वो योग्यता है ही, किंतु कलियुग के दुषित वातावरण व घटनाओं के वश हम अपने स्व-ऊर्जा व स्वमान के दीप को देख नहीं पाते। इसलिए परमात्मा ने कई बार हमें ध्यान रखने के लिए कहा है कि बच्चे, ये सब कुछ होता ही रहेगा, परिस्थितियां आयेंगी-जायेंगी, व्यक्ति के स्वभाव-संस्कार टकरायेंगे, लेकिन अपने दिव्य आभामण्डल का स्मरण व स्मृति को तरोताज़ा रखें, ताकि समय आने पर उनका उपयोग व प्रयोग कर सकें। यही श्रेष्ठ विधि है कि श्रेष्ठ करने के लिए हमारे मन में श्रेष्ठ आदर्श का चित्र होना चाहिए। परमात्मा बार-बार हमें इसी के सम्बंध में भिन्न-भिन्न रूप से शिक्षा व सावधानी देते हैं। हमें इनका गहराई से चिंतन करने की रुचि रखनी चाहिए।

बाबा की याद की गोली खायें...फालतू ख्यालात से फ्री हो जायें

संगमयुग पर बाबा से हेल्थ, वेल्थ और हैप्पीनेस का वर्सा मिलता है। भक्ति में यह तीनों भगवान से मांगते थे, ज्ञान में यह अपने आप बाबा दे रहा है। भक्ति में जब तक सामने कोई मूर्ति नहीं, मंत्र नहीं तब तक याद नहीं कर सकते। ज्ञान मार्ग में न कोई मूर्ति, न मंत्र, न कोई माला, ज्ञान मार्ग में समझ मिल गई। विवेक कहता है भक्ति में बहुत मेहनत है, बुद्धि भटकती है, धक्के खाती है। वहमी बन जाते हैं। करते हैं तो कुछ प्राप्ति नज़र नहीं आती, नहीं करते हैं तो डर लगता है, कुछ हो न जाये।

बाबा ने ज्ञान देकर हमें निर्भय बना दिया है। भक्ति के बंधनों से छुटकारा पाने से बहुत बहादुरी चाहिए। देह के सम्बन्धों से, दुनियावी पदार्थों से छुटकारा पाना बड़ी बात नहीं है, लेकिन भक्ति से छुटकारा पाना सहज नहीं है। यह ज्ञान नास्तिक के लिए सहज है, वह जल्दी समझ जायेगा लेकिन भक्ति के लिए कठिन है। भक्ति में जो अल्पकाल की प्राप्ति है, उसमें वह फंसा रहता है। अब हमारी बुद्धि में भक्ति और ज्ञान का कन्ट्रास्ट है, इसलिए अब भटकने की ज़रूरत नहीं। फालतू पैसा खर्च करने की ज़रूरत नहीं। अब समझ आ गई कि एक बाबा को याद करना है, अपनी जीवन सफल करनी है।

कई पूछते हैं- हमारी धारणा श्रेष्ठ कैसे बने? धारणा श्रेष्ठ तब बनेगी जब पहले बुद्धि क्लीयर हो। बुद्धि का भटकना छूटे। बुद्धि एकाग्र होकर परमात्मा बाप को याद करे तो धारणा

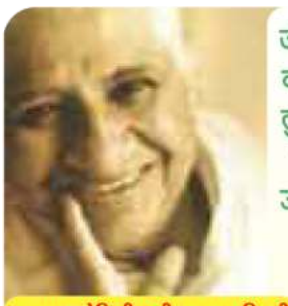

जो अच्छी तरह प्यार से बाबा को याद करता है, बाबा उसे कहता- बच्चे, मैं तुम्हारी माँ भी हूँ, प्रीतम भी हूँ... वह बहुत प्यार करता है। उस प्यार में उसी समय मन का दुःख व शरीर का दर्द सब चला जायेगा।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

श्रेष्ठ बने। एक धारणा होती है गुणों की, दूसरी धारणा होती है ज्ञान व योग लगाने की। गुण धारण करने की धारणा अलग है, योगयुक्त होने के लिए धारणा अलग है।

योगयुक्त रहने के लिए अशरीरी होकर बाबा से लिंक जोड़ने की लगन हो, इसके लिए चाहिए अन्तर्मुखता और एकान्त। जिसे योगयुक्त होकर रहने की लगन है वह कभी यह नहीं कह सकता कि एकान्त में रहने का टाइम नहीं मिलता है। उसकी रात में भी कई बार आँख खुल जायेगी। नींद ऐसी नहीं होगी जो सोया सो खोया। कोई ऐसे कहते हैं कि क्या करें नींद ही नहीं खुली। कोई फिर कहते नींद आती ही नहीं। योगी के यह चिन्ह नहीं हैं। ऐसे नहीं नींद आये तो बहुत आये, न आये तो आये ही नहीं। जो फालतू ख्याल करते हैं उन्हें नींद नहीं आती। जो फालतू ख्यालात से फ्री रहते हैं वह बाबा की याद में सो जायेंगे। जो बाबा की याद की गोली नहीं खाते, उन्हें नींद के लिए गोली लेनी पड़ती है। योग के टाइम नींद आयेगी, वैसे नींद के समय नींद नहीं आयेगी।

हमारी नींद ऐसी हो जो गुडनाइट की और बाबा की गोद में चले गये फिर आंख खुलने का समय आये तो अपने आप खुल जाए, दिल कहे उठकर बाबा को याद करूँ। जो उठते ही बाबा की याद में बैठता है, वह बाबा का प्यार पाता है। उस समय सुस्ती न आये। यदि सिर में दर्द भी होगा तो ठीक हो जायेगा। जो अच्छी तरह प्यार से बाबा को याद करता है, बाबा उसे कहता- बच्चे, मैं तुम्हारी माँ भी हूँ, प्रीतम भी हूँ... वह बहुत प्यार करता है। उस प्यार में उसी समय मन का दुःख व शरीर का दर्द सब चला जायेगा। यह धारणा है।

कोई-कोई कहता है मुझे खुशी का अनुभव नहीं होता। लेकिन अनुभव तब हो जब ज्ञान को धारण करो और औरों को दान करो। समय पर जो सेवा सामने आये, उसे दिल से, सच्चाई व प्रेम से करो तो खुशी आयेगी। जो मजबूरी से काम करता उसे खुशी नहीं आती। जो काम दिल से करता, उसे खुशी आती है।

अपने ज्ञान-योग के पंखों को चेक करते रहें...

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कोई चीज़ बढ़िया हो उसको सम्भाल के रखा भी हो परन्तु वो समय पर काम में नहीं आवे तो उसकी क्या वैल्यू? हमारे लिए तो वो बेकार ही हुई ना! ज्ञान सुनते-सुनते शक्तियों की परिभाषा जो आपके पास है, उसे मनन करके यूज़ करो तो समय पर आपको काम में आयेंगी। समय पर शक्ति इमर्ज होगी। तो यह प्रैक्टिस करो, समय पर मेरी शक्ति काम में आती है या नहीं? तो एक सहनशक्ति को धारण करना है क्योंकि उसके बिना गति नहीं है। दूसरा समाने की शक्ति भी आपको बहुत चाहिए।

हर एक अपने पंखों को पहले चेक करो- ज्ञान और योग की दोनों ही सब्जेक्ट मेरी ठीक है? जब मैं उड़ना चाहूँ तब उड़ सकता हूँ? हमारे ज्ञान की तलवार की धार बड़ी तेज होनी चाहिए और इस ज्ञान की तलवार को केवल म्यान में ही रख करके खुश नहीं हो जाओ बल्कि हमेशा अपनी इस तलवार को देखते रहो तो समय पर काम में आ सकेगी।

अन्त में यह पांचों तत्व आंधी, तूफान, आग, पृथ्वी का हिलना... यह सब इकट्ठा काम करेंगे तो सोचो उस समय हमारी कैसी स्थिति होनी चाहिए? अभी तो फिर भी ठीक है, कहीं कुछ, कहीं कुछ होता है तो एक-दो के सहारे से, स्थान के सहयोग से अपने को फिर भी बचा रहे हैं। लेकिन जब पांच तत्व ही एक साथ काम करेंगे तो अन्त में ऐसा कोई सहारे का स्थान नहीं मिलेगा। उस समय तो हमारी यही तैयारी काम आयेगी कि फरिश्ता बनके उड़ जायें, बस।

अन्त समय के लिए अभी तो अशरीरी बनने का अभ्यास करो। अशरीरी माना शरीर में होते हुए भी शरीर का भान न हो। शरीर के सम्बन्ध व पदार्थों के तरफ बार-बार मन का खिंचाव न हो। इसके लिए जितना समय चाहे, जहाँ चाहे उतना समय हमारा मन वहाँ ही रहे, यह अभ्यास चाहिए और यह अभ्यास सारे दिन में भी बीच-बीच में करते रहो।

अभी-अभी बॉडी कॉन्सेस, अभी-अभी सोल कॉन्सेस और अभी-अभी बाबा की याद। बहुतकाल युद्ध के अभ्यासी होंगे तो चन्द्रवंशी में पहुँचेंगे। फिर पहले युग का सुख तो ले ही नहीं पायेंगे। तो ब्रह्माकुमार बनके क्या किया? बी.के. बने हैं तो बाबा से पूरा वर्सा लेना चाहिए। अगर योग में मेहनत व युद्ध है तो कर्मातीत व अशरीरी स्थिति का अनुभव नहीं कर सकेंगे। फिर अन्त में आप युद्ध में ही जायेंगे क्योंकि अन्तकाल तो किसका पूछकर नहीं आयेगा।

बाबा ने कहा है कि सबकुछ अचानक ही होने वाला है इसलिए एवररेडी रहो। जो एवररेडी रहेंगे वही पास होंगे। कल क्या होगा, कुछ भी हो सकता है, इतना एवररेडी हमको रहना चाहिए। इसके लिए मम्मा का एक फेवरेट स्लोगन था कि हर घड़ी हमारी अन्तिम घड़ी है। अन्तिम घड़ी में और कोई बात याद नहीं हो।

कभी भी, कुछ भी हो सकता है लेकिन मैं रेडी हूँ? मैं सेकण्ड में उड़ सकती हूँ या टाइम लगेगा! बाबा को उल्हना देंगे या बाबा से मदद मिलने लिए बाबा को याद करेंगे! लेकिन बाबा ने कहा है कि हिम्मत वाले को मदद मिलेगी। हिम्मत माना योग ठीक हो, विजयी हो।

रियलाइज़ेशन से ही परिवर्तन आता है...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा कहता है सन्देश तो सारे विश्व में पता चल गया कि ब्रह्माकुमारियां क्या हैं, कईयों को पता है ज्ञान क्या है, परन्तु पहले जो लाइट-माइट का अनुभव होता था ना, वो अनुभव हो। इतना हमारे योग का बल, कर्म का फल हो, जो राइट काम है वही करना है। इतना तो बुद्धि है, विवेक है जो थोड़ा राइट नहीं है वो मुझे नहीं करना है। तो जिसको अन्दर से यह पक्का है कि जो बात ठीक नहीं है वो नहीं करनी है, तो ऑटोमेटिक वो उससे फ्री हो जाते हैं, मैं अनुभव से कहती हूँ। किसके दबाव प्रभाव में आ करके कोई गलत काम करते हैं, यह भी माया है। किसी भी कारण से गलत काम करते हैं, यह भी माया है। किसी भी कारण से गलत काम करने से खुशी नहीं रहेगी, कोई न कोई प्रकार से सजा मिलेगी। छूटेगा नहीं जब तक रियलाइज़ नहीं किया है, माफी नहीं मांगी है।

मम्मा समझाती थी सबसे अच्छी बात है रियलाइज़ेशन, परिवर्तन उससे आता है। मैं आत्मा हूँ परमात्मा का बच्चा हूँ, कर्मों की गुह्य गति को समझा। अपने को आत्मा समझना माना उसी स्वरूप में उसको याद करना, याद से शक्ति आयेगी तो बाबा की जो नॉलेज है, धारण होगी फिर कर्म अच्छे होंगे, फिर संग अच्छा मिलेगा, धारणा सेवा कराती है। आजकल है सकाश तो खुद को भी देखते हैं, परमात्मा बाप की शिक्षा, समझानी, सावधानी से वो सकाश मिल रही है। कोई पूछते हैं तुम कैसे चलती हो? बाबा ने अपने को छिपाकर बच्चों को आगे रखा है। जो बाबा के अन्तिम घड़ी के महावाक्य हैं ना वो हर घड़ी याद रहें- निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी। हमारी अन्त मते सो गति वही होवे। निराकारी स्थिति में रहने से निर्विकारी, काम नहीं, कोई क्रोध नहीं। इस पुरुषार्थ में थकना नहीं है। जिसको पढ़ाई से प्यार है ना, उसे पढ़ाई की और पढ़ाने वाले की बहुत कदर होती है, वो कभी थकेंगे नहीं। थकने में आवाज़ चेंज हो जाता है क्योंकि मंज़िल ऊंची है फिर मुझे पहुँचना ज़रूर है, थकना नहीं है इसलिए बाबा कहता है चित्रों के सामने जाके बैठो, यह पुरुषार्थ बहुत अच्छा है। तो समझा, हम अगर बाबा से अच्छी तरह से सकाश ले रहे हैं ना, तो कोई दूर बैठे भी खींच रहे हैं। कोई-कोई अनुभव लिखते हैं, सकाश खींच रहे हैं। अन्त मते का ख्याल रखो। बहुत काल से जो प्राप्ति है ना वही अन्त मते काम में आयेगी, अभी भी वही काम में आ रही है।